ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-**E2**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Manoj Kumar **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** xxx.

Center & Date: M.K. Negi, 21.07.19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: —

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

खंड A और B प्रत्येक में से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: 125 × 2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: 125 × 2 = 250

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।
   Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.
2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।
   Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.
3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।
   Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.
4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।
   Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।
   To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.
2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।
   The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.
3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।
   The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.
4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।
   Morality is its own reward.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखन चाहिये।
(Candidate must not write on this margin

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।

   Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.

2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।

   Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.

3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

   Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.

4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।

   Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(3.) प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

" व्यक्ति स्वभाव से ही लालची, स्वार्थी और शक्ति प्राप्ति की चाहत रखने वाला है।"

उक्त कथन प्रसिद्ध राजनीतिक विद्वान हॉब्स का है। जिन्होंने व्यक्ति के बारे में कहा है कि मनुष्य अधिक से अधिक यश, सम्मान और शक्ति पाना चाहता है। इस संदर्भ में मनुष्य किसी अन्य की परवाह भी नहीं करता है।

इसी तरह मैकियावली ने भी मानव स्वभाव का चित्रण लालची, कपटी, धोखेबाज के रूप में किया है।

आज की वर्तमान दुनिया, मनुष्य के इसी स्वभाव और व्यवहार से पीड़ित है और मनुष्य है कि अंधा होकर अपनी स्वार्थसिद्धी में दौड़ा जा रहा है, जिसका खामियाजा प्रकृति को भुगतना पड़ रहा है। प्रकृति की यह

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

महाँ पर संक्षेप में प्रकृति शब्द को जान लेना बेहतर होगा। प्रकृति अर्थात यह पूरी पृथ्वी या फिर जिस पर हम रह रहे है वो जमीन (स्थलमंडल), जिस हवा में सांस ले रहे है वो वायुमंडल तथा जलमंडल व अंतरिक्ष बन सभी का सम्मिलित रूप ही प्रकृति है। इसे धर्म, दर्शन की भाषा में हम भी कह सकते है कि भगवान ने जिन चीजों से (हवा, पानी, मिट्टी, आग आदि) इस पृथ्वी को बनाया है वो सब प्रकृति का ही अभिन्न अंग है।

आज की दुनिया को देखते है तो पाते है कि आज प्रकृति की हम-सभी को उतनी ज्यादा चिंता है नहीं, जितनी होनी चाहिए। यदि इसके पीछे कारणों को खोजा जाए तो यह हम सभी का अतिशय लालच और प्रकृति का मालिक बन बैठने की मानसिकता सर्वप्रमुख है। इसके अलावा वैश्विक स्तर पर राष्ट्र-राज्यों के मध्य अंधाधुंध विकास और

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

समृद्ध बनने की कटु भागमभाग भी है।

यह अनदेखी मनुष्य के व्यक्तिगत रूप से लेकर राज्य व राष्ट्रों तक सभी जगह व्याप्त है। आज व्यक्ति अपने स्वार्थों हेतु वनों को उजाड़ रहा है तो कहीं पर नदियों के पानी को मोड़ कर उसके प्रवाह को बाधित कर रहा है। या फिर खेती, उद्योगों के नाम पर जमीन से पानी को निगले जा रहा है। बदले में दुनियाभर का कचरा, रसायन आदि प्रकृति में घोले जा रहा है। इसी तरह राष्ट्र- राज्य भी बड़ी- बड़ी विकास परियोजनाओं के नाम पर, उद्योगों के विकास पर तथा कई क्रांतियों जैसे औद्योगिक क्रांति, तकनीकी क्रांति, आदि द्वारा प्रकृति की निरंतर अनदेखी करके बड़े नुकसान पहुंचा रहे है।

सवाल यह है कि हम सभी प्रकृति की अनदेखी कर रह रहे है तो क्या यह सच में जानबूझकर ही कर रहे है या फिर हमारी मजबूरी भी है।

इसका उत्तर दोनों है। कुछ

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

मजबूरियां भी है तो कुछ लालच भी।

मजबूरी है विकास करने की, राष्ट्र की प्रगति व समृद्धि को मजबूत करके आम जीवन को सुखद बनाने की है। जिससे समाज, देश तथा पूरे विश्व से गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, दूर करके एक सभ्य और न्याय युक्त समाज व विश्व का निर्माण कर सकें। एक गरिमामय जीवन की ~~कुछ~~ सभी को प्राप्ति संभव हो।

इसी चाहत में राष्ट्र-राज्य प्रकृति की अनदेखी करने में लगे है। यह अनदेखी तात्कालिक रूप में सभी को भा रही है, ~~क्~~ ~~क्योंकि~~ इससे हमारा जीवनस्तर जो ऊँचा उठ रहा है लेकिन यह अनदेखी दीर्घकालिक रूप में एक बड़ी चुनौति पेश करने वाली है। यह विनाश का आमंत्रण-पत्र जैसी है जो कि अब धीरे-धीरे हमें अहसास भी होने लगा है कि हम सब गलत रास्ते पर चल रहे है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रकृति के मनेडेज़ी के परिणामों पर गौर करें तो ज्यादा स्पष्ट हो पाएगा कि सच में यह आमंत्रण-पत्र है या फिर एक खूनी कल्पना मात्र है।

वर्तमान समय में पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से जूझ रहा है। आज हम सभी प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा, भूकम्प, दावाग्नि, सुनामी, भूस्खलन, बादलों का फटना, पॉलर वर्टैक्स आदि का सामना कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत में बाढ़ की वजह से आई केदारनाथ त्रासदी, पिछले वर्ष की केरल बाढ़, इस वर्ष की बिहार, असम की बाढ़ और इनमें बड़ी संख्या में जन-धन की हानि होना। इसी तरह भारत के पूर्वी इलाकों में आए दिन चक्रवाती तूफानों से भीषण तबाही होना, २००५ की सुनामी द्वारा संपूर्ण विश्व को तहस-नहस करना, अमेरिकी महाद्वीप में पॉलर वर्टैक्स तथा बर्फीले तूफानों से आपातकाल

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

लागू होना, भारी बरसाएँ विनाश के आमंत्रण पत्र के कुछ संकेत मात्र हैं।

प्रकृति की अनदेखी का परिणाम है कि आज प्रदूषण (जल, वायु, भूमि, अंतरिक्ष) में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। आज जैव-विविधता के समक्ष संकट उत्पन्न हो रहा है; जीव-जंतु धीरे-धीरे विलुप्त होते जा रहे हैं जो कि प्रकृति की अनदेखी और विनाश का आमंत्रण पत्र ही तो सूचक है।

इसी तरह बढ़ता मानव-प्रभु संघर्ष हो या फिर विश्व से वनों का कम होता क्षेत्रफल हो या फिर अंटार्कटिका जैसे महाद्वीपीय ग्लेशियरों का पिघलना हो, ये सब प्रकृति की अनदेखी और विनाश के आमंत्रण पत्र ही तो सूचक हैं।

अब सवाल यह उठता है कि भविष्य में भी ऐसे ही अनदेखी जारी रही तो फिर उसके क्या परिणाम हो सकते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिख चाहिये।
(Candidate must no write on this margi

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इसका एक ही परिणाम होगा, वह विनाश होगा। यदि यह देखें कि यह विनाश किस रूप में होगा तो यह प्राकृतिक आपदाओं में तेजी आएगी और इससे चारों तरफ जन-धन की हानि होगी, खाद्य सुरक्षा प्रभावित होगी, पीने का स्वच्छ जल मिलना मुश्किल हो जाएगा।

इसके साथ ही जैव विविधता की हानि होने से मनुष्य- प्रकृति का संबंध टूटेगा और मानव- पशु संघर्ष में वृद्धि होगी।

साथ ही जल-जंगल-जमीन में परिवर्तन आने से, इन पर आश्रित लोगों में असंतोष, आक्रोश बढ़ेगा। जिसकी परिणति हिंसा, आंदोलन, विद्रोह आदि होगी। जिससे न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के समक्ष कानून-व्यवस्था तथा आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ पैदा होगी। इससे नक्सलवाद, उग्रवाद, आतंकवाद जैसी बीमारियां पैदा होगी। इससे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिरता व शांति भी प्रभावित होगी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

और अव्यवस्था का जन्म होगा।

इसी तरह यह अनदेखी राष्ट्र-राज्यों के बीच असमानता में वृद्धि करेगा। जिससे लोगों के प्रवासन में वृद्धि होने से शरणार्थी समस्याएँ भी उत्पन्न होगी। जो कि अंतत: वैश्विक शांति व सौहार्द को नुकसान पहुँचाएगी। इसलिए प्रकृति की अनदेखी अंतत: पूरी मानवजाति व पूरी पृथ्वी के लिए हानिकारक होगी।

ऐसा नहीं है कि मनुष्य को प्रकृति की अनदेखी के परिणामों का ज्ञान नहीं है और वह कुछ नहीं कर रहा है। मनुष्य पिछले कुछ समय से विकास के साथ प्रकृति के संरक्षण पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है। अब मनुष्य सतत विकास की अवधारणा को अपना रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1972 में आयोजित स्टॉकहोम सम्मेलन, 1992 का रियो सम्मेलन हो या 2015 का पेरिस सम्मेलन, इसके अलावा सतत विकास लक्ष्य ये सब मनुष्य की प्रकृति के प्रति जागरूकता व ~~[illegible]~~ जिम्मेदार बनने को दर्शाते हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसी तरह भारत द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को प्राथमिकता देना, किसी भी बड़ी परियोजना के शुरू करने से पूर्व पर्यावरणीय प्रभाव आकलन करना, डीजल-पेट्रोल पर सैस में वृद्धि करना, जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना के अंतर्गत 8 मिशन शुरू करना, राष्ट्रीय वन नीति 1988 द्वारा वनीकरण को बढ़ावा देना आदि भारत द्वारा प्रकृति की देखभाल करने के कुछ उदाहरण हैं।

इसलिए अब हम सभी को व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय स्तर दोनों पर एक जिम्मेदार बनकर अपनी भूमिका का निर्वहन करना होगा। अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति में मानवहित तथा प्रकृति संरक्षण को वरीयता देनी होगी। हम सभी को गांधीजी का मंत्र कि "प्रकृति हर व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है किंतु एक भी व्यक्ति के लालच को नहीं।" को ध्यान में रखना होगा व लालच से बचना होगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसके अलावा हमको प्रकृति का महत्व कि "वन, धरा के भूषण हैं, करते दूर प्रदूषण हैं।" को समझकर इसका मित्र बनकर दोस्ती निभानी होगी। तभी प्रकृति और मानवजाति विनाश के आमंत्रण पत्र को अस्वीकार करके खुशहाली, समृद्धि, सुख-शांति को आमंत्रित करने में सफल हो पाएगी।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस
हाशिये में नहीं लिख
चाहिये।
(Candidate must n
write on this margi

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

   To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.

2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।

   The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.

3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।

   The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.

4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।

   Morality is its own reward.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(1) (a) युद्ध के लिए तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' की सदा से ही समर्थक रही है। जिसका मतलब है कि यह पूरा विश्व एक परिवार की तरह है, और जिसमें सभी शांतिपूर्वक, आपसी प्रेम और भाईचारे से रहें। लोगों के मध्य किसी भी प्रकार का कोई संघर्ष और विवाद ना हो। यदि सच में ऐसी दुनिया बन जाए जिसमें सभी प्रेमपूर्वक, सुख-शांति से रहे तो यह दुनिया ही स्वर्ग बन जाए।

किंतु सच्चाई थोड़ी सी अलग है और वह ~~भारतीय संस्कृति के~~ यह है कि राष्ट्र एक-दूसरे के विरुद्ध दुश्मनी पाल कर बैठे हुए हैं। यथार्थवादी विचारक इसे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को शक्ति-संघर्ष का स्थल मानकर इसकी व्याख्या करते हैं।

इसी शक्ति-संघर्ष के कारण

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

राज्य असुरक्षित महसूस करते है। राज्य दूसरे राज्यों को अपनी क्षेत्रीय एकता, अखंडता और संप्रभुता के लिए खतरा मानकर भयभीत रहते है। जिसकी वजह से अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, अराजकता, अव्यवस्था तथा संघर्ष में परिवर्तित हो जाती है।

इसलिए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के यथार्थवादी विचारक, राज्य की सुरक्षा हेतु अत्यधिक मात्रा में शक्ति प्राप्त करने की वकालत करते है। यदि राज्य सैनिक रूप में शक्तिशाली होगा तो अन्य राज्य उसके खिलाफ युद्ध नहीं करेगा। ऐसे में जब राज्यों के मध्य युद्ध नहीं होगा तो राज्यों के मध्य अवश्य ही शांति की स्थापना हो जाएगी। इसी तरह से निजी जीवन भी शक्ति संतुलन से संचालित होता है।

अभी तक की बातें तो किताबी हुई, यदि इसे हम वास्तविक दुनिया में लागू करके देखे तो ज्यादा बेहतर ढंग से समझ पाएंगें कि युद्ध के लिए तैयार रहना शांति को संरक्षित

उम्मीदवार को इ
हाशिये में नहीं
चाहिये।
(Candidate mu
write on this m

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

करने का प्रभावी तरीका है या फिर नहीं। इसके अलावा शांति को संरक्षित करने व निर्मित करने का क्या कोई अन्य उपाय भी है क्या? यदि है तो क्या है? आदि

युद्ध के लिए तैयार रहने का मतलब है कि राज्यों के पास पर्याप्त मात्रा में सैना, हथियार, बम आदि हो। जिससे कि युद्ध की स्थिति में वह सामने वाले राज्यों को बराबर की टक्कर दे पायें और जहाँ तक हो, युद्ध में विजय प्राप्त करें। शीतयुद्ध के पहले विश्व में कुछ राज्य ही शक्तिशाली थे, जैसे कि ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी, जापान आदि। ये सब राज्य शक्तिशाली होने के कारण तथा अन्य राज्यों के युद्ध में सक्षम ना होने के कारण इन राज्यों ने पूरे विश्व में युद्धों के माध्यम से अपने-अपने उपनिवेश बसाएँ। जो कि युद्ध की महत्ता को बताता है।

इसके बाद द्वितीय विश्वयुद्ध उपरांत की दुनिया जिसे शीतयुद्ध की दुनिया

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के नाम से जाना जाता है को देखें तो पाते हैं कि उस समय विश्व में २ बड़ी महाशक्तियाँ एक-दूसरे के विरुद्ध संघर्षरत थी किंतु दोनों के मध्य युद्ध नहीं हुआ। यद्यपि 1962 का क्यूबा संकट के समय लगा था कि ये दोनों (अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ) लड़ पड़ेंगें, फिर भी इनके मध्य युद्ध नहीं हुआ और विवाद को सुलझा लिया गया।

विचारकों का मानना है कि शीतयुद्ध काल में युद्ध नहीं होने का बड़ा कारण दोनों महाशक्तियों द्वारा बड़ी मात्रा में हथियारों का निर्माण करके युद्ध के लिए तैयार रहना था। ऐसे में दोनों के मध्य युद्ध होता तो दोनों देशों को ही बराबर की हानि उठानी पड़ती। इसलिए शांति बनी रही।

इसी तरह वर्तमान समय के कुछ उदाहरण ले जैसे कि पिछले वर्ष डोकलाम मुद्दे पर भारत-चीन का आमने-सामने आना

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

पर युद्ध ना होना और अतेलः मामलें को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने के पीछे भी कहीं ना कहीं भारत की अपने भाग से युद्ध के लिए तैयार रखने की रणनीति ही थी, जिसने चीन को पीछे हटने हेतु मजबूर किया।

इससे पूर्व 1962 का एक के समय था जब भारत युद्ध के लिए तैयार नहीं था, तब इसी चीन ने भारत को साम्राज्यवादी देश कहकर भारत पर युद्ध थोप दिया था क्योंकि भारत-तब सैन्य रूप में कमजोर था। जबकि आज वहीं चीन, डोकलाम युद्ध, सीमा विवाद, दक्षिणी चीन सागर युद्ध, दलाई लामा युद्ध आदि पर भी युद्ध की बजाय शांतिपूर्वक वार्ताओं को प्राथमिकता देता है जो कि यह दर्शाता है कि युद्ध के लिए तैयार रहना, शांति को संरक्षित करने का प्रभावी उपाय है

इसी तरह वर्तमान में बढ़ते अमेरिका-चीन तनाव, अमेरिका-रूस तनाव;

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को हाशिये में नहीं ... चाहिये। (Candidate m... write on this ...

अमेरिका-ईरान, अमेरिका-उत्तर कोरिया तनाव आदि के बावजूद ~~कुछ~~ विश्व की सबसे बड़ी महाशक्ति अमेरिका भी युद्ध का विकल्प अपनाने में डरती है, संकोच करती है क्योंकि ये सभी राष्ट्र भी युद्ध के लिए अपने आप को तैयार किए हुए हैं।

इसके विपरित ~~सन~~ 2001 में अमेरिका द्वारा ईराक, अफगानिस्तान के विरुद्ध छेड़ना, 2014 का क्रीमिया मुद्दा, व 1962 में चीन द्वारा भारत के विरुद्ध युद्ध शुरू करना, आदि ऐसे मामले हैं जहाँ पर विपक्षी के युद्ध करने में सक्षम न होने पर दूसरे राष्ट्र द्वारा युद्ध शुरू किया गया और वैश्विक शांति को नुकसान पहुँचाया गया।

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि युद्ध करने की क्षमता में ऐसा क्या है जो यह शांति को संरक्षित

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

करती है। यह एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य को बराबर रूप में क्षति पहुँचाने की क्षमता है जिससे दूसरा राज्य भी नुकसान होने के डर से भयभीत रहता है और युद्ध को टालने का प्रयास करता है।

जैसे कि आज की परमाणु दुनिया में हम सभी परमाणु बमों के ढेर पर बैठे हैं। ऐसे में किसी भी राज्य की जरा सी उग्रता कुछ ही क्षणों में पूरी पृथ्वी को तथा मानवजाति मिटा सकती है। शायद यही वजह है कि आज विश्व में एक छोटा सा देश उत्तर कोरिया भी अमेरिका जैसी वैश्विक महाशक्ति को शांत किए हुए है। इसलिए युद्ध के लिए तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का एक प्रभावी उपाय है।

यद्यपि यह कहें कि यह तरीका हमेशा ही कारगर रहता है तो यह भी गलत है क्योंकि 1998 में भारत-पाक दोनों के

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

परमाणु संपन्न राष्ट्र होने के बावजूद 1999 में करगिल युद्ध होना, युद्ध के लिए तैयार रहने की सीमा भी प्रकट करता है।

उपर्युक्त चर्चा से यह तो स्पष्ट होता है कि युद्ध के लिए तैयार होना शांति को संरक्षित करने का एक प्रभावी तरीका है किंतु यहाँ पर इस बात पर कि यह सबसे प्रभावी है या नहीं पर मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।

मेरे हिसाब से यह एक प्रभावी तरीका अवश्य है किंतु सबसे प्रभावी उपाय नहीं है क्योंकि आज सभी राष्ट्र युद्ध के लिए तैयार होने के बावजूद भी विश्व में संघर्ष बने हुए हैं।

इसी तरह लोगों द्वारा निजी जीवन में लड़ने हेतु तैयार रहने के बावजूद भी स्थायी शांति का निर्माण नहीं होता और

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अशांति उत्पन्न होती ही रहती है।

तो फिर अगला प्रश्न यह है कि वो कौनसा/कौनसे तरीके है जो शांति को संरक्षित करने हेतु प्रभावी है?

युद्ध के लिए तैयार रहने के अलावा अन्य तरीके और भी है जैसे कि राष्ट्रों के मध्य शांति निर्माण व संरक्षण हेतु व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि करना, लोगो के मध्य आवागमन बढ़ाना, सिविल सोसाइटीज का निर्माण करना, विश्व में परमाणु निशस्त्रीकरण करना, संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को मजबूत बनाना, राष्ट्रीय हितों की बजाए ~~मानवीय~~ मानवीय हितों, मानवाधिकारों को सर्वोपरि रखना आदि के द्वारा वैश्विक शांति का निर्माण भी किया जा सकता है और शांति को संरक्षित भी रखा जा सकता है।

इसी तरह व्यक्ति के निजी जीवन में शांति निर्माण हेतु प्रेम, सहयोग, भाईचारा,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

करुणा, दया, समानुभूति, सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों का प्रसार करना होगा। लोगों में शिक्षा का प्रसार करना होगा। साथ ही समावेशी विकास तथा गरिमामय जीवन की सुनिश्चितता करके निजी जीवन में शांति को संरक्षित किया जा सकता है।

और निजी तथा वैश्विक दोनों जीवन में शांति होने पर ही सुरक्षित जीवन और सुखी जीवन संभव है।

उम्मीदवार को इ
हाशिये में नहीं
चाहिये।
(Candidate mus
write on this ma

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation